इफिसियों

1 यह खत पौलुस की तरफ से है, जो अल्लाह की मरज़ी से मसीह ईसा का रसूल है।

मैं इफिसुस शहर के मुकद्दसीन को लिख रहा हूँ, उन्हें जो मसीह ईसा में ईमानदार हैं।

2 खुदा हमारा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती बरख़ें।

मसीह में रूहानी बरकतें

3 खुदा हमारे खुदावंद ईसा मसीह के बाप की हम्दो-सना हो! क्योंकि मसीह में उसने हमें आसमान पर हर रूहानी बरकत से नवाज़ा है।

4 दुनिया की तख़लीक से पेशतर ही उसने मसीह में हमें चुन लिया ताकि हम मुकद्दस और बेऐब हालत में उसके सामने ज़िंदगी गुज़ारें।

यह कितनी अज़ीम मुहब्बत थी!

5 पहले ही से उसने फ़ैसला कर लिया कि वह हमें मसीह में अपने बेटे-बेटियाँ बना लेगा। यही उस की मरज़ी और खुशी थी

6 ताकि हम उसके जलाली फ़ज़ल की तमज़ीद करें, उस मुफ़्त नेमत के लिए जो उसने हमें अपने प्यारे फ़रज़ंद में दे दी।

7 क्योंकि उसने मसीह के खून से हमारा फिघा देकर हमें आज़ाद और हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है। अल्लाह का यह फ़ज़ल कितना वसी है

8 जो उसने कसरत से हमें अता किया है।

अपनी पूरी हिकमत और दानाई का इज़हार करके

9 अल्लाह ने हम पर अपनी पोशीदा मरज़ी ज़ाहिर कर दी, यानी वह मनसूबा जो उसे पसंद था और जो उसने मसीह में पहले से बना रखा था।

10 मनसूबा यह है कि जब मुकर्ररा वक़्त आएगा तो अल्लाह मसीह में तमाम कायनात को जमा कर देगा। उस वक़्त सब कुछ मिलकर मसीह के तहत हो जाएगा, खाह वह आसमान पर हो या ज़मीन पर।

11 मसीह में हम आसमानी बादशाही के वारिस भी बन गए हैं। अल्लाह ने पहले से हमें इसके लिए मुकर्रर किया, क्योंकि वह सब कुछ यों सरंजाम देता है कि उस की मरज़ी का इरादा पूरा हो जाए।

12 और वह चाहता है कि हम उसके जलाल की सताइश का बाइस बनें, हम जिन्होंने पहले से मसीह पर उम्मीद रखी।

13 आप भी मसीह में हैं, क्योंकि आप सच्चाई का कलाम और अपनी नजात की खुशखबरी सुनकर ईमान लाए। और अल्लाह ने आप पर भी रूहल-कुद्स की मुहर लगा दी जिसका वादा उसने किया था।

14 रूहल-कुद्स हमारी मीरास का बयाना है। वह हमें यह ज़मानत देता है कि अल्लाह हमारा जो उस की मिलकियत हैं फ़िघा देकर हमें पूरी मखलसी तक पहुँचाएगा। क्योंकि हमारी ज़िंदगी का मक़सद यह है कि उसके जलाल की सताइश की जाए।

पौलस की दुआ

15 भाइयो, मैं खुदावंद ईसा पर आपके ईमान और आपकी तमाम मुक़द्दसीन से मुहब्बत के बारे में सुनकर

16 आपके लिए खुदा का शुक्र करने से बाज़ नहीं आता बल्कि आपको अपनी दुआओ में याद करता रहता हूँ।

17 मेरी खास दुआ यह है कि हमारे खुदावंद ईसा मसीह का खुदा और जलाली बाप आपको दानाई और मुकाशफ़ा की रूह दे ताकि आप उसे बेहतर तौर पर जान सकें।

18 वह करे कि आपके दिलों की आँखें रौशन हो जाएँ। क्योंकि फिर ही आप जान लेंगे कि यह कैसी उम्मीद है जिसके लिए उसने आपको बुलाया है, कि यह जलाली मीरास कैसी दौलत है जो मुक़द्दसीन को हासिल है,

19 और कि हम ईमान रखनेवालों पर उस की कुदरत का इज़हार कितना ज़बरदस्त है। यह वही बेहद कुदरत है

20 जिससे उसने मसीह को मुरदों में से ज़िंदा करके आसमान पर अपने दहने हाथ बिठाया।

21 वहाँ मसीह हर हुक्मरान, इख्तियार, कुव्वत, हुकूमत, हाँ हर नाम से कहीं सरफ़राज़ है, खाह इस दुनिया में हो या आनेवाली दुनिया में।

22 अल्लाह ने सब कुछ उसके पाँवों के नीचे करके उसे सबका सर बना दिया। यह उसने अपनी जमात की खातिर किया

23 जो मसीह का बदन है और जिसे मसीह से पूरी मामूरी हासिल होती है यानी उससे जो हर तरह से सब कुछ मामूर कर देता है।

2

मौत से ज़िंदगी तक

1 आप भी अपनी खताओं और गुनाहों की वजह से रूहानी तौर पर मुरदा थे।

2 क्योंकि पहले आप इनमें फँसे हुए इस दुनिया के तौर-तरीकों के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारते थे। आप हवा की कुव्वतों के सरदार के ताबे थे, उस रूह के जो इस वक़्त उनमें सरगारमे-अमल है जो अल्लाह के नाफ़रमान हैं।

3 पहले तो हम भी सब उनमें ज़िंदगी गुज़ारते थे। हम भी अपनी पुरानी फ़ितरत की शहवतें, मरज़ी और सोच पूरी करने की कोशिश करते रहे। दूसरों की तरह हम पर भी फ़ितरी तौर पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होना था।

4 लेकिन अल्लाह का रहम इतना बसी है और वह इतनी शिद्दत से हमसे मुहब्बत रखता है

5 कि अगरचे हम अपने गुनाहों में मुरदा थे तो भी उसने हमें मसीह के साथ ज़िंदा कर दिया। हाँ, आपको अल्लाह के फ़ज़ल ही से नजात मिली है।

6 जब हम मसीह ईसा पर ईमान लाए तो उसने हमें मसीह के साथ ज़िंदा करके आसमान पर बिठा दिया।

7 ईसा मसीह में हम पर मेहरबानी करने से अल्लाह आनेवाले ज़मानों में अपने फ़ज़ल की लामहदूद दौलत दिखाना चाहता था।

8 क्योंकि यह उसका फ़ज़ल ही है कि आपको ईमान लाने पर नजात मिली है। यह आपकी तरफ़ से नहीं है बल्कि अल्लाह की बख़्शिश है।

9 और यह नजात हमें अपने किसी काम के नतीजे में नहीं मिली, इसलिए कोई अपने आप पर फ़ख़र नहीं कर सकता।

10 हाँ, हम उसी की मख़लूक हैं जिन्हें उसने मसीह में नेक काम करने के लिए खलक किया है। और यह काम उसने पहले से हमारे लिए तैयार कर रखे हैं, क्योंकि वह चाहता है कि हम उन्हें सरंजाम देते हुए ज़िंदगी गुज़ारें।

मसीह में एक

11 यह बात ज़हन में रखें कि माज़ी में आप क्या थे। यहूदी सिर्फ़ अपने लिए लफ़्ज़ मख़तून इस्तेमाल करते थे अगरचे वह अपना ख़तना सिर्फ़ इनसानी हाथों से करवाते हैं। आपको जो ग़ैरयहूदी हैं वह नामख़तून करार देते थे।

12 उस वक़्त आप मसीह के बग़ैर ही चलते थे। आप इसराइल क़ौम के शहरी न बन सके और जो वादे अल्लाह ने अहदों के ज़रीए अपनी क़ौम से किए थे वह आपके लिए नहीं थे। इस दुनिया में आपकी कोई उम्मीद नहीं थी, आप अल्लाह के बग़ैर ही ज़िंदगी गुज़ारते थे।

13 लेकिन अब आप मसीह में हैं। पहले आप दूर थे, लेकिन अब आपको मसीह के खून के वसीले से करीब लाया गया है।

14 क्योंकि मसीह हमारी सुलह है और उसी ने यहूदियों और ग़ैरयहूदियों को मिलाकर एक क़ौम बना दिया है। अपने जिस्म को क़ुरबान करके उसने वह दीवार गिरा दी जिसने उन्हें अलग करके एक दूसरे के दुश्मन बना रखा था।

15 उसने शरीअत को उसके अहकाम और ज़वाबित समेत मनसूख़ कर दिया ताकि दोनों ग़ुरोहों को मिलाकर एक नया इनसान ख़लक़ करे, ऐसा इनसान जो उसमें एक हो और सुलह-सलामती के साथ ज़िंदगी गुज़ारे।

16 अपनी सलीबी मौत से उसने दोनों ग़ुरोहों को एक बदन में मिलाकर उनकी अल्लाह के साथ सुलह कराई। हाँ, उसने अपने आपमें यह दुश्मनी ख़त्म कर दी।

17 उसने आकर दोनों ग़ुरोहों को सुलह-सलामती की खुशख़बरी सुनाई, आप ग़ैरयहूदियों को जो अल्लाह से दूर थे और आप यहूदियों को भी जो उसके करीब थे।

18 अब हम दोनों मसीह के ज़रीए एक ही रूह में बाप के हुज़ूर आ सकते हैं।

19 नतीजे में अब आप परदेसी और अजनबी नहीं रहे बल्कि मुक़द्दसीन के हमवतन और अल्लाह के घराने के हैं।

20 आपको रसूलों और नबियों की बुनियाद पर तामीर किया गया है जिसके कोने का बुनियादी पत्थर मसीह ईसा ख़ुद है।

21 उसमें पूरी इमारत जुड़ जाती और बढ़ती बढ़ती ख़ुदावंद में अल्लाह का मुक़द्दस घर बन जाती है।

22 दूसरों के साथ साथ उसमें आपकी भी तामीर हो रही है ताकि आप रूह में अल्लाह की सुकूनतगाह बन जाएँ।

3

पौलस की गैरयहूदियों में खिदमत

1 इस वजह से मैं पौलस जो आप गैरयहूदियों की खातिर मसीह ईसा का कैदी हूँ अल्लाह से दुआ करता हूँ।

2 आपने तो सुन लिया है कि मुझे आपमें अल्लाह के फ़ज़ल का इंतज़ाम चलाने * की खास ज़िम्मादारी दी गई है।

3 जिस तरह मैंने पहले ही मुख़तसर तौर पर लिखा है, अल्लाह ने खुद मुझ पर यह राज़ ज़ाहिर कर दिया।

4 जब आप वह पढ़ेंगे जो मैंने लिखा तो आप जान लेंगे कि मुझे मसीह के राज़ के बारे में क्या क्या समझ आई है।

5 गुज़रे ज़मानों में अल्लाह ने यह बात ज़ाहिर नहीं की, लेकिन अब उसने इसे रूहुल-कुदूस के ज़रीए अपने मुक़द्दस रसूलों और नबियों पर ज़ाहिर कर दिया।

6 और अल्लाह का राज़ यह है कि उस की खुशख़बरी के ज़रीए गैरयहूदी इसराईल के साथ आसमानी बादशाही के वारिस, एक ही बदन के आज्ञा और उसी वादे में शरीक हैं जो अल्लाह ने मसीह ईसा में किया है।

7 मैं अल्लाह के मुफ़्त फ़ज़ल और उस की क़ुदरत के इज़हार से खुशख़बरी का खादिम बन गया।

8 अगरचे मैं अल्लाह के तमाम मुक़द्दसीन से कमतर हूँ तो भी उसने मुझे यह फ़ज़ल बख़्शा कि मैं गैरयहूदियों को उस लामहदूद दौलत की खुशख़बरी सुनाऊँ जो मसीह में दस्तयाब है।

9 यही मेरी ज़िम्मादारी बन गई कि मैं सब पर उस राज़ का इंतज़ाम ज़ाहिर करूँ जो गुज़रे ज़मानों में सब चीज़ों के ख़ालिक खुदा में पोशीदा रहा।

10 क्योंकि अल्लाह चाहता था कि अब मसीह की जमात ही आसमानी हुक्मरानों और कुव्वतों को अल्लाह की वसी हिकमत के बारे में इल्म पहुँचाए।

11 यही उसका अज़ली मनसूबा था जो उसने हमारे खुदावंद मसीह ईसा के वसीले से तकमील तक पहुँचाया।

12 उसमें और उस पर ईमान रखकर हम पूरी आज्ञादी और एतमाद के साथ अल्लाह के हुज़ूर आ सकते हैं।

* 3:2 यानी खुशख़बरी सुनाने।

13 इसलिए मेरी आपसे गुजारिश है कि आप मेरी मुसीबतें देखकर बेदिल न हो जाएँ। यह मैं आपकी खातिर बरदाशत कर रहा हूँ, और यह आपकी इज्जत का बाइस है।

मसीह की मुहब्बत

14 इस वजह से मैं बाप के हुज़ूर अपने घुटने टेकता हूँ,

15 उस बाप के सामने जिससे आसमानो-जमीन का हर खानदान नामज़द है।

16 मेरी दुआ है कि वह अपने जलाल की दौलत के मुवाफिक़ यह बख़्शे कि आप उसके रूह के वसीले से बातिनी तौर पर ज़बरदस्त तकवियत पाएँ,

17 कि मसीह ईमान के ज़रीए आपके दिलों में सुकूनत करे। हाँ, मेरी दुआ है कि आप मुहब्बत में जड़ पकड़ें और इस बुनियाद पर ज़िंदगी यों गुज़ारें

18 कि आप बाकी तमाम मुक़द्दीनों के साथ यह समझने के क़ाबिल बन जाएँ कि मसीह की मुहब्बत कितनी चौड़ी, कितनी लंबी, कितनी ऊँची और कितनी गहरी है।

19 खुदा करे कि आप मसीह की यह मुहब्बत जान लें जो हर इल्म से कहीं अफ़ज़ल है और यों अल्लाह की पूरी मामूरी से भर जाएँ।

20 अल्लाह की तमजीद हो जो अपनी उस क़ुदरत के मुवाफिक़ जो हममें काम कर रही है ऐसा ज़बरदस्त काम कर सकता है जो हमारी हर सोच और दुआ से कहीं बाहर है।

21 हाँ, मसीह ईसा और उस की जमात में अल्लाह की तमजीद पुश्त-दर-पुश्त और अज़ल से अबद तक होती रहे। आमीन।

4

बदन की यगांगत

1 चुनौचे में जो खुदावांद में कैदी हूँ आपको ताकीद करता हूँ कि उस ज़िंदगी के मुताबिक़ चलें जिसके लिए खुदा ने आपको बुलाया है।

2 हर वक़्त हलीम और नरमदिल रहें, सब्र से काम लें और एक दूसरे से मुहब्बत रखकर उसे बरदाशत करें।

3 सुलह-सलामती के बंधन में रहकर रूह की यगांगत कायम रखने की पूरी कोशिश करें।

4 एक ही बदन और एक ही रूह है। यों आपको भी एक ही उम्मीद के लिए बुलाया गया।

5 एक खुदावंद, एक ईमान, एक बपतिस्मा है।

6 एक खुदा है, जो सबका वाहिद बाप है। वह सबका मालिक है, सबके जरीए काम करता है और सबमें मौजूद है।

7 अब हम सबको अल्लाह का फ़ज़ल बख़्शा गया। लेकिन मसीह हर एक को मुख्तलिफ़ पैमाने से यह फ़ज़ल अता करता है।

8 इसलिए कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, “उसने बुलंदी पर चढकर कैदियों का हज़ूम गिरिफ़्तार कर लिया और आदमियों को तोहफ़े दिए।”

9 अब गौर करें कि चढने का ज़िक्र किया गया है। इसका मतलब है कि पहले वह ज़मीन की गहराइयों में उतरा।

10 जो उतरा वह वही है जो तमाम आसमानों से ऊँचा चढ गया ताकि तमाम कायनात को अपने आपसे मामूर करे।

11 उसी ने अपनी जमात को तरह तरह के ख़ादिमों से नवाज़ा। बाज़ रसूल, बाज़ नबी, बाज़ मुबशिशर, बाज़ चरवाहे और बाज़ उस्ताद हैं।

12 इनका मक़सद यह है कि मुक़द्दसीन को खिदमत करने के लिए तैयार किया जाए और यों मसीह के बदन की तामीरो-तरक्की हो जाए।

13 इस तरीके से हम सब ईमान और अल्लाह के फ़रज़ंद की पहचान में एक होकर बालिग़ हो जाएंगे, और हम मिलकर मसीह की मामूरी और बलूगत को मुनअकिस करेंगे।

14 फिर हम बच्चे नहीं रहेंगे, और तालीम के हर एक झोंके से उछलते फिरते नहीं रहेंगे जब लोग अपनी चालाकी और धोकेबाज़ी से हमें अपने जालों में फँसाने की कोशिश करेंगे।

15 इसके बजाए हम मुहब्बत की रूह में सच्ची बात करके हर लिहाज़ से मसीह की तरफ़ बढ़ते जाएंगे जो हमारा सर है।

16 वही नसों के जरीए पूरे बदन के मुख्तलिफ़ हिस्सों को एक दूसरे के साथ जोड़कर मुतहिद कर देता है। हर हिस्सा अपनी ताकत के मुवाफ़िक़ काम करता है, और यों पूरा बदन मुहब्बत की रूह में बढ़ता और अपनी तामीर करता रहता है।

मसीह में नई ज़िंदगी

17 पस मैं खुदावंद के नाम में आपको आगाह करता हूँ कि अब से गैरईमानदारों की तरह ज़िंदगी न गुज़ारें जिनकी सोच बेकार है

18 और जिनकी समझ अंधेरे की गिरिफ्त में है। उनका उस ज़िंदगी में कोई हिस्सा नहीं जो अल्लाह देता है, क्योंकि वह जाहिल हैं और उनके दिल सरख्त हो गए हैं।

19 बेहिस होकर उन्होंने अपने आपको ऐयाशी के हवाले कर दिया। यों वह न बुझनेवाली प्यास के साथ हर क्रिस्म की नापाक हरकतें करते हैं।

20 लेकिन आपने मसीह को यों नहीं जाना।

21 आपने तो उसके बारे में सुन लिया है, और उसमें होकर आपको वह सच्चाई सिखाई गई जो ईसा में है।

22 चुनाँचे अपने पुराने इनसान को उसके पुराने चाल-चलन समेत उतार देना, क्योंकि वह अपनी धोकेबाज़ शहवतों से बिगड़ता जा रहा है।

23 अल्लाह को आपकी सोच की तजदीद करने दें

24 और नए इनसान को पहन लें जो यों बनाया गया है कि वह हक़ीकी रास्तबाज़ी और कुदूसियत में अल्लाह के मुशाबेह है।

25 इसलिए हर शख्स झूट से बाज़ रहकर दूसरों से सच बात करे, क्योंकि हम सब एक ही बदन के आज्ञा हैं।

26 गुस्से में आते वक़्त गुनाह मत करना। आपका गुस्सा सूरज के गुरूब होने तक ठंडा हो जाए,

27 वरना आप इबलीस को अपनी ज़िंदगी में काम करने का मौका देंगे।

28 चोर अब से चोरी न करे बल्कि ख़ूब मेहनत-मशक्कत करके अपने हाथों से अच्छा काम करे। हाँ, वह इतना कमाए कि ज़रूरतमंदों को भी कुछ दे सके।

29 कोई भी बुरी बात आपके मुँह से न निकले बल्कि सिर्फ़ ऐसी बातें जो दूसरों की ज़रूरियात के मुताबिक़ उनकी तामीर करें। यों सुननेवालों को बरकत मिलेगी।

30 अल्लाह के मुक़द्दस रूह को दुख न पहुँचाना, क्योंकि उसी से अल्लाह ने आप पर मुहर लगाकर यह ज़मानत दे दी है कि आप उसी के हैं और नजात के दिन बच जाएंगे।

31 तमाम तरह की तलखी, तैश, गुस्से, शोर-शराबा, गाली-गलोच बल्कि हर क्रिस्म के बुरे रवय्ये से बाज़ आएँ।

32 एक दूसरे पर मेहरबान और रहमदिल हों और एक दूसरे को यों मुआफ़ करें जिस तरह अल्लाह ने आपको भी मसीह में मुआफ़ कर दिया है।

5

रौशनी में ज़िंदगी गुज़ारना

1 चूँकि आप अल्लाह के प्यारे बच्चे हैं इसलिए उसके नमूने पर चलें।

2 मुहब्बत की रूह में ज़िंदगी यों गुज़ारें जैसे मसीह ने गुज़ारी। क्योंकि उसने हमसे मुहब्बत रखकर अपने आपको हमारे लिए अल्लाह के हज़ूर कुरबान कर दिया और यों ऐसी कुरबानी बन गया जिसकी खुशबू अल्लाह को पसंद आई।

3 आपके दरमियान ज़िनाकारी, हर तरह की नापाकी या लालच का ज़िक्र तक न हो, क्योंकि यह अल्लाह के मुकद्दसीन के लिए मुनासिब नहीं है।

4 इसी तरह शर्मनाक, अहमक़ाना या गंदी बातें भी ठीक नहीं। इनकी जगह शुक्रगुज़ारी होनी चाहिए।

5 क्योंकि यकीन जानें कि ज़िनाकार, नापाक या लालची मसीह और अल्लाह की बादशाही में मीरास नहीं पाएँगे (लालच तो एक क्रिस्म की बुतपरस्ती है)।

6 कोई आपको बेमानी अलफ़ाज़ से धोका न दे। ऐसी ही बातों की वजह से अल्लाह का ग़ज़ब उन पर जो नाफ़रमान हैं नाज़िल होता है।

7 चुनौचे उनमें शरीक न हो जाएँ जो यह करते हैं।

8 क्योंकि पहले आप तारीकी थे, लेकिन अब आप खुदावंद में रौशनी हैं। रौशनी के फ़रज़ंद की तरह ज़िंदगी गुज़ारें,

9 क्योंकि रौशनी का फल हर तरह की भलाई, रास्तबाज़ी और सच्चाई है।

10 और मालूम करते रहें कि खुदावंद को क्या कुछ पसंद है।

11 तारीकी के बेफल कामों में हिस्सा न लें बल्कि उन्हें रौशनी में लाएँ।

12 क्योंकि जो कुछ यह लोग पोशीदगी में करते हैं उसका ज़िक्र करना भी शर्म की बात है।

13 लेकिन सब कुछ बेनिकाब हो जाता है जब उसे रौशनी में लाया जाता है।

14 क्योंकि जो रौशनी में लाया जाता है वह रौशन हो जाता है। इसलिए कहा जाता है,

“ऐ सोनेवाले, जाग उठ!

मुरदों में से जी उठ,

तो मसीह तुझ पर चमकेगा।”

15 चुनौचे बड़ी एहतियात से इस पर ध्यान दें कि आप ज़िंदगी किस तरह गुज़ारते हैं—बेसमझ या समझदार लोगों की तरह।

16 हर मौक़े से पूरा फ़ायदा उठाएँ, क्योंकि दिन बुरे हैं।

17 इसलिए अहमक़ न बनें बल्कि खुदावंद की मरज़ी को समझें।

18 शराब में मत्वाले न हो जाएँ, क्योंकि इसका अंजाम ऐयाशी है। इसके बजाएँ रूहल-कुदूस से मामूर होते जाएँ।

19 ज़बूरो, हम्दो-सना और रूहानी गीतों से एक दूसरे की हौसलाअफ़ज़ाई करें। अपने दिलों में खुदावंद के लिए गीत गाएँ और नग़मासराई करें।

20 हाँ, हर वक़्त हमारे खुदावंद ईसा मसीह के नाम में हर चीज़ के लिए खुदा बाप का शुक़ करें।

मियाँ-बीवी का ताल्लुक़

21 मसीह के ख़ौफ़ में एक दूसरे के ताबे रहें।

22 बीवियो, जिस तरह आप खुदावंद के ताबे हैं उसी तरह अपने शौहर के ताबे भी रहें।

23 क्योंकि शौहर वैसे ही अपनी बीवी का सर है जैसे मसीह अपनी जमात का। हाँ, जमात मसीह का बदन है जिसे उसने नजात दी है।

24 अब जिस तरह जमात मसीह के ताबे है उसी तरह बीवियाँ भी अपने शौहरों के ताबे रहें।

25 शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मसीह ने अपनी जमात से मुहब्बत रखकर अपने आपको उसके लिए क़ुरबान किया

26 ताकि उसे अल्लाह के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करे। उसने उसे कलामे-पाक से धोकर पाक-साफ़ कर दिया

27 ताकि अपने आपको एक ऐसी जमात पेश करे जो जलाली, मुक़द्दस और बेइलज़ाम हो, जिसमें न कोई दाग़ हो, न कोई झुर्रि, न किसी और किस्म का नुक़्स।

28 शौहरों का फ़र्ज़ है कि वह अपनी बीवियों से ऐसी ही मुहब्बत रखें। हाँ, वह उनसे वैसे ही मुहब्बत रखें जैसी अपने जिस्म से रखते हैं। क्योंकि जो अपनी बीवी से मुहब्बत रखता है वह अपने आपसे ही मुहब्बत रखता है।

29 आखिर कोई भी अपने जिस्म से नफरत नहीं करता बल्कि उसे खुराक मुहैया करता और पालता है। मसीह भी अपनी जमात के लिए यही कुछ करता है।

30 क्योंकि हम उसके बदन के आज्ञा हैं।

31 कलामे-मुकद्दस में भी लिखा है, “इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। वह दोनों एक हो जाते हैं।”

32 यह राज़ बहुत गहरा है। मैं तो उसका इतलाक़ मसीह और उस की जमात पर करता हूँ।

33 लेकिन इसका इतलाक़ आप पर भी है। हर शौहर अपनी बीवी से इस तरह मुहब्बत रखे जिस तरह वह अपने आपसे रखता है। और हर बीवी अपने शौहर की इज्जत करे।

6

बच्चों और वालिदैन का ताल्लुक

1 बच्चो, खुदावंद में अपने माँ-बाप के ताबे रहें, क्योंकि यही रास्तबाज़ी का तकाज़ा है।

2 कलामे-मुकद्दस में लिखा है, “अपने बाप और अपनी माँ की इज्जत करना।” यह पहला हुक्म है जिसके साथ एक वादा भी किया गया है,

3 “फिर तू खुशहाल और ज़मीन पर देर तक जीता रहेगा।”

4 ऐ वालिदो, अपने बच्चों से ऐसा सुलूक मत करें कि वह गुस्से हो जाएँ बल्कि उन्हें खुदावंद की तरफ़ से तरबियत और हिदायत देकर पालें।

गुलाम और मालिक

5 गुलामो, डरते और काँपते हुए अपने इनसानी मालिकों के ताबे रहें। खुलूसदिली से उनकी खिदमत यों करें जैसे मसीह की।

6 न सिर्फ़ उनके सामने ही और उन्हें खुश रखने के लिए खिदमत करें बल्कि मसीह के गुलामों की हैसियत से जो पूरी लग्न से अल्लाह की मरज़ी पूरी करना चाहते हैं।

7 खुशी से खिदमत करें, इस तरह जैसा कि आप न सिर्फ़ इनसानों की बल्कि खुदावंद की खिदमत कर रहे हों।

8 आप तो जानते हैं कि जो भी अच्छा काम हमने किया उसका अज़्र खुदावंद देगा, खाह हम गुलाम हों या आज़ाद।

9 और मालिको, आप भी अपने गुलामों से ऐसा ही सुलूक करें। उन्हें धमकियाँ न दें। आपको तो मालूम है कि आसमान पर आपका भी मालिक है और कि वह जानिबदार नहीं होता।

रूहानी ज़िरा-बकतर

10 एक आखिरी बात, खुदाबंद और उस की ज़बरदस्त कुव्वत में ताकतवर बन जाएँ।

11 अल्लाह का पूरा ज़िरा-बकतर पहन लें ताकि इबलीस की चालों का सामना कर सकें।

12 क्योंकि हमारी जंग इनसान के साथ नहीं है बल्कि हुक्मरानों और इख्तियारवालों के साथ, इस तारीक दुनिया के हाकिमों के साथ और आसमानी दुनिया की शैतानी कुव्वतों के साथ है।

13 चुनौचे अल्लाह का पूरा ज़िरा-बकतर पहन लें ताकि आप मुसीबत के दिन इबलीस के हमलों का सामना कर सकें बल्कि सब कुछ संरंजाम देने के बाद क्रायम रह सकें।

14 अब यों खड़े हो जाएँ कि आपकी कमर में सच्चाई का पटका बँधा हुआ हो, आपके सीने पर रास्तबाज़ी का सीनाबंद लगा हो

15 और आपके पाँवों में ऐसे जूते हों जो सुलह-सलामती की खुशखबरी सुनाने के लिए तैयार रहें।

16 इसके अलावा इमान की ढाल भी उठाए रखें, क्योंकि इससे आप इबलीस के जलते हुए तीर बुझा सकते हैं।

17 अपने सर पर नजात का ख़ोद पहनकर हाथ में रूह की तलवार जो अल्लाह का कलाम है थामे रखें।

18 और हर मौके पर रूह में हर तरह की दुआ और मिन्नत करते रहें। जागते और साबितकदमी से तमाम मुकद्दसीन के लिए दुआ करते रहें।

19 मेरे लिए भी दुआ करें कि जब भी मैं अपना मुँह खोलूँ अल्लाह मुझे ऐसे अलफ़ाज़ अता करे कि पूरी दिलेरी से उस की खुशखबरी का राज़ सुना सकूँ।

20 क्योंकि मैं इसी पैगाम की खातिर कैदी, हॉ जंजीरों में जकड़ा हुआ मसीह का एलची हूँ। दुआ करें कि मैं मसीह में उतनी दिलेरी से यह पैगाम सुनाऊँ जितना मुझे करना चाहिए।

आखिरी सलाम

21 आप मेरे हाल और काम के बारे में भी जानना चाहेंगे। खुदावंद में हमारा अज़ीज़ भाई और वफ़ादार खादिम तुखिक्स आपको यह सब कुछ बता देगा।

22 मैंने उसे इसी लिए आपके पास भेज दिया कि आपको हमारे हाल का पता चले और आपको तसल्ली मिले।

23 खुदा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आप भाइयों को सलामती और ईमान के साथ मुहब्बत अता करें।

24 अल्लाह का फ़ज़ल उन सबके साथ हो जो अनमित मुहब्बत के साथ हमारे खुदावंद ईसा मसीह को प्यार करते हैं।

کتابہ-مقدس

**The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo
Version, Hindi Script**

Copyright © 2019 Urdu Geo Version

Language: اردو (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution-Noncommercial-No Derivatives license 4.0.

You may share and redistribute this Bible translation or extracts from it in any format, provided that:

You include the above copyright and source information.

You do not sell this work for a profit.

You do not change any of the words or punctuation of the Scriptures.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

2024-09-20

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 1 Jul 2025 from source files dated 20 Sep 2024

a1ee0020-7263-5fce-8289-9d7a7ac2d299